द्विस्पिर् 9,80,1. 1,185,6. सृतेन विद्यं भुवनं वि र्राज्ञ 5,63,7. 80,1. सृपं वासप्य ्तिनं पूर्वीः 6,39,4. 5,1,7. सृतेन पत्ता स्रिध् सिन्धुं सह्यः 10, 123,4. 7,36,12. AV. 11,1,23. — b) von Rechtswegen, billig: सृतेनीदित्या मिहे वा मिह्लम् १. V. 2,27,8. उज्ञावी पत्तु मिन्ति सृतिनं 10,108,4. सृतेन राज्ञवर्न्तं विविच्चन्ममं राष्ट्रस्पाधिपत्यमिहे 124,5. खावी क् नामा प्रयम सृतेनीभिद्यावे भवतः 12,1. Manchmal abgeschwächt zu einer einfachen Bekräftigung wie sane, 6,68,2. 7,75,1. — c) wahr, aufrichtig: मित्र सृतेन सार्धन् १. V. 3,5,3. सार्धकृतेन धिर्य द्धामि 7,34,8. शंस मे कस्य भिष्यमे पृच्छे सृतेन वे verkünde mir der Wahrheit gemäss MBn. 1,884. — Vgl. स्रन्त.

स्तिचिंत् (स्त + चित्) adj. das heilige Gesetz u. s. w. merkend, desselben kundig: श्रुग्निविंदा स्तिचिद्धि मृत्यः R.V. 1,143,5. स्तस्य बाध्यृत्-चित्त्वाधीः 4,3,4. विं वी चिकित्सदत्विच्छ नारी 16,10. 5,3,9. स मुक्तित्विद्देस्त् हार्ता 7,85,4.

মনরা (মন + রা) adj. so v. a. d. fg. Wort RV. 4,40,5.

सताँत (सत + जात) adj. rechtzeitig, rechtgeartet; dem Rechten, der heiligen Wahrheit entsprossen, ihr gemäss: सतात् सताति (श्रीषधे) AV. 5,15, 1. দুয়াच मूर्ण स्तजात्या गिरा RV. 10,138,2. von Agni 1,36, 19. 144,7. 189,6. 3,20,2. 6,13,3. den Marut 3,54,13. 5,16,14. von Andern 3,6,10. 7,66,13. 9,108,8. AV. 18,2,15. — Vgl. सतप्रजात.

ऋतंजातसत्य (स॰ + स॰) adj. das dem heiligen Gesetz Gemässe verwirklichend (?): ता या ता भुद्रा उषसं: पुरास्रिभिष्टिख्रीमा ऋतजीतसत्याः R.V. 4,31,7.

सति जैंत् (सत + जित्) adj. das Rechte erkämpfend VS. 17,83.

মন্ত্রী $\sqrt{(মন + \overline{s}, \overline{\chi})}$ adj. vollkommen gealtert RV. 10,143,1.

सत्त्वाँ (सत + ता) adj. wohlunterrichtet, weise; des heiligen Gesetzes u. s. w. kundig RV. 1,72,8. 4,19,7. 5,43,6. 58,8. ये द्वाना य्वियो य्वियोगं मनेपर्वात्रा श्रमृता सत्वाः 7,33,15. 38,8. पितरः 10,15,1. 64,16. स्तामा इयम्प्ता सेताव्याम् 63,3. 104,4. AV. 4,2,6.

सतंड्य (von सत + ड्या) adj. wohlbesehnt: धन्व RV. 2,24,8.

सतयुम (स॰ + खु॰) adj. mit heiliger Kraft erfüllt: सृतं वर्दनृतखुम स्-त्यं वर्दन्सत्यकर्मन् स़v. 9,113,4.

स्त्रैंधामन् (स° + धा°) 1) adj. wahren, lautern Wesens: स्त्रधामािस् स्वर्धाति: VS. 5,32. 18,38. — 2) m. ein Bein. Vishņu's Taik. 1,1,28. R. 6,102,18. N. pr. des 13ten Manu VP. 268,N.8. des Indra im 12ten Manvantara Baig. P. 8,13,29. Vgl. स्त्रधामन्.

सर्तैंथाति (स॰ + घी॰) adj. wahrhaft —, heilig gesinnt; von Göttern: सर्तथीतय त्रा गत सत्यंथमीण त्रधरम् RV. 5,51,2. 4,55,2. 6,39,2. 51,10. स्तथ्ञ (स॰ + घ॰) m. ein Bein. Rudra's Buig. P. 3,12,12. N. pr. eines Weisen 6,13,15. ein Sohn Kañka's 9,24,43. ein Bein. Pratardana's 17,6. VP. 408.

स्तर्ने (स्त + नी) adj. richtig führend: या राजभ्य सत्निभ्या द्दार्श BV. 2.27. 12.

स्रतपर्ण (स॰ + प॰) m. N. pr. eines Fürsten Такк. 2, 7, 17 (राजिष्). ein Sohn Ajutågit's und Freund Nala's Haarv. 814. — Vgl. स्तुपर्ण und म्रार्तपर्णि.

된러대 (된저 + 대) adj. das Rechte —, die Ordnung wahrend; am Glauben —, am Gesetz festhaltend; die Ushas RV.1,113,12. Agni 3,20,4.

म्र्रो स त्रिषरत्पा स्तिता उन्न ज्योतिर्नशते देवपुष्टे 6,3,1.7,20,6. VS.17,80. स्तिपेय (स॰ + पे॰) m. N. einer Ceremonie (एकाक्): यः कामयेत नै-िक्सं पाटमन स्थामिति स स्तिपेयेन यज्ञेत Âçv. Ça. 9,7. स्वर्गजामस्यर्तपेयः Кат. Ça. 22,8,10. Маç. 4,9 in Verz. d. B. H. 72.

ऋतेपेशास् (ऋ॰ + पे॰) adj. dessen Gestalt vollkommen ist: Varuṇa ŖV. 5,66,1.

सर्तेप्रज्ञात (स॰ + प्र॰) adj. so v. a. सतज्ञात. सामा न वेधा स्वप्रज्ञात: R.V. 1,63, 10(5). Bṛhaspati 2,23, 15. इमा धिर्य सुतर्गा क्रिंगे विता ने स्वत्र्वातां वृक्तीर्मावन्दत् 10,67,1. — सिस्नेतां नार्यृतप्रज्ञाता A.V. 1,11,1 (vgl. die Anm. dazu). von Pflanzen TS. 3,1,8,2.

स्तैप्रवीत (स॰ + प्र॰) adj. rite conceptus oder consitus (?): वर्धान्यं पूर्वी: त्यो विद्यपा स्वातुश्चर्यमृतप्रवीतम् (Padap. irrig: च। र्यम् ।) RV. 1,70,7 (4).

됐지다면 (됐지 + 다면) adj. dessen Ansehen (Aussehen) vollkommen ist: die Acvin RV. 1,180, 3.

स्तवाध (स॰ + बा॰) m. N. pr. s. म्रार्तवाध.

स्तिमाग (स॰ + भा॰) m. N. pr. eines Manues, Άρταβάζης, Çañk. zu Bṛn. Âr. Up. 3,2,4. — Vgl. श्रातिभाग.

सतंभर् (सतम्, acc. von सत, +भर्) 1) m. die Wahrheit in sich tragend, ein Bein. Brahman's Buic. P. 6,13, 17. — 2) ſ. ह्या a) Verstand: स्रंत-भराद्यश्च द्व्यः Радь. 68,3. Sch. 1: स्तं सत्यं भर्ति विभित्ते । सा स्तंभरा प्रज्ञा । पतञ्जलिनाप्युक्तं प्रज्ञा स्तंभर्तपादि. v. 1. स्तंभवा ° und Sch. 2: स्र-तं सत्यमेव स्तंभवास्ता स्राद्यो पासाम्. — b) N. pr. eines Flusses Вийс. Р. 5,20,4. Vgl. सत्यंभरा.

सत्प् (denom. von सत) sich in die Ordnung schicken, Etwas recht machen; med.: कर्ड स्तुवर्त सत्पत्त देवत् सिषः के। विष्ठं भ्रोहते R.v. 8, 3,14. Ausserdem ist nur das partic. praes. act. im Gebrauch: सत्पैत्, gewöhnlich mit Dehnung सतापैत्, den richtigen Gang —, die Ordnung einhaltend, gesetzmässig; gehorsam, fromm: वर्मा अग्निमृतयेह्नसादि R.v. 5, 43,7. सर्गा न सृष्टा अर्वतिर्भतापन् 7,87,1. 5,12,3. धिर्यः पिन्ह्यानाः स्वसंदि न गावं सतापत्तीर्भि वावस्य इन्द्रम् 9,94,2. स वेद देव स्नानमं देवाँ सतापत्त दमें 4,8,3. स वा मधु प्रवाचदतायन् 1,117,22. 90,6. 91,7. वमग्निदेतायतः 2,1,2. 32,1. 5,27,4. 41,1. 8,62,1.

ऋतया (von ऋत्य्) f. und davon ein gleichlaut. instr. als adv. richtig: धिर्यं वनेम ऋतया सर्पत्त: R.V. 2,11, 12.

स्तर्युँ (wie eben), gewöhnl. mit Dehnung स्तायुँ, adj. so v. a. स्तयस् (s. u. स्तय्) Nia. 10,45. तं ने इन्द्र स्त्युस्तानिद् िन तृम्पसि ए. ४,४७, 10. TS. 3,5,8,1. न वा ट्रास्य वाल्यणा संतायवाः पुरावंमतन् 2,2,5,5. प्राणितारः कस्य चिरतायाः ए. 1,169,5. तामी सतायवः समीधिरे 5,8,1. स्वर्शतं चाष् वितंतमृतायवः ४4,12. 8,23,9. 68,6. 9,3,3. 36,4. VS. 7,10. (Сат. Ва. 4,1,4,10).

सत्युक्ति (स॰ + पु॰) f. rechte Verbindung: सृतं वर्दत सृत्युक्तिम्रमन् \mathbb{R} V. 10,61,10.

स्तपुँत् (स्त + पुत्त) adj. 1) gut im Geschirr stehend, von Pferden RV. 4,51,5. 7,71,3. — 2) sich wohl verbündend: स्तधीतिभिक्तिपुरपुंतान: RV. 6,39,2.

स्तवत् (von स्त) adj. Recht habend, die Wahrheit aussagend Внас. P. 1,13, 19.